चना मे कीट प्रबंधन

विश्व मे चना फसल के कुल क्षेत्र्ाफल एवं उत्पादन मे भारत की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह कुल क्षेत्र्ाफल एवं उत्पादन का क्रमशः ६३ प्रतिशत एवं ६६ प्रतिशत है। भारत के कुल दलहन उत्पादन मे भी चना फसल की मुख्य भाागीदारी है। देश मे यह कुल उत्पादन का ४८ प्रतिशत के लगभग है। इसके बाद क्रमशः अरहर १६ प्रतिशत , उडद ०९ प्रतिशत, मूंग ०७ प्रतिशत, मसूर ०६ प्रतिशत एवं मटर ०४ प्रतिशत का य®गदान ह®ता है।

मध्यप्रदेश, देश मे चना उत्पादन मे अग्रणी राज्य है। राज्य का लगभग ३८ प्रतिशत उत्पादन एवं ३५ प्रतिशत क्षेत्र्ाफल का य ®गदान है। ग्यारहवीं पंचवर्षीय य®जना अवधि मे राज्य का उत्पादकता (९५१ कि..ग्रा./हें) राष्ट्रीय औसत उत्पादकता (८८१ कि..ग्रा./हें) से अधिक है।

मध्यप्रदेश मे दलहन की पैदावार मुख्यतः रबी फसल के रुप मे लेते है। कुल दलहन आच्छादन का लगभग ७८ प्रतिशत क्षेत्र्ाफल रबी मे एवं २२ प्रतिशत खरीफ मे लिया जाता है। रबी की मुख्य फसल चना का कुल रबी दलहन क्षेत्र्ा मे ७७ प्रतिशत य®गदान है, तत्पश्चात् मसूर १५ प्रतिशत एवं मटर ०६ प्रतिशत है।

ग्यारहवीं पंचवर्षीय य ®जना (२००७-०८ से २०११-१२) के द ©रान मध्यप्रदेश के मुख्य उत्पाादक जिले निम्नानुसार है। विदिशा, उज्जैन ,रायसेन, दम¨ह, सागर, अश¨कनगर, नरसिंहपुर, देवास। ग्यारहवीं पंचवर्षीय य ®जना के द ©रान क्षेत्र्ा उत्पादन एवं उत्पादकता तीन¨ मे महत्वपूर्ण प्रगति देखी गई। उत्पादन मे गत् दसवीं पंचवर्षीय य®जना से ३२ प्रतिशत से ऊपर की वृद्धि हुयी।

<u>चने के प्रमुख कीट</u>

1. <u>कटुआ कीट</u>

<u>पहचान चिन्हः</u> यह मटमैले भूरे रंग का पतंगा होता हैA इसके अगले पंख पिछले पंखों से रंग में काले गाढे होते है जिनके लम्बाई में काले रंग के धब्बे होते है तथा किनारों पर आड़ी दिशा में हल्के काले रंग की लहरदार पट्टी पायी जाती हैA

<u>क्षतिः वानस्पतिक अवस्था मे कीट की हरे एवं भूरे रंग की सुड़ियाँ रात में निकलकर नये पौधों को जमींन की सतह से या पुराने पौधों की शाखाओं को काटकर जमीन पर गिरा देती हैं।</u>

2. फली बेधक कीट

पहचान चिन्हः प्रौढ़ पतंगा पीले बादामी रंग का होता है । पंख के मध्य में एक काला निशान होता है । पछले पंख कुछ चौड़े मटमैले सफ़ेद से हल्के रंग के होते है तथा इनके किनारे पर काले रंग की पट्टी होती है । सुड़ियाँ हरे अथवा भूरे हरे रंग की होती हैं।

क्षतिः फूल एवं फलियाँ बनते समय नवजात सुड़ियाँ प्रारम्भ में कोमल पत्तियों को खुरचकर खाती है बाद में ये पत्तियों , कलिकाओं तथा फलियों पर आक्रमण करती है। सुड़ियाँ फलियों में छेद बनाकर सिर को अन्दर घुसकर दानो को खाती रहती है एक सूंडी अपने जीवनकाल में ३० से ४० फलियों को प्रभावित कर देती हैं।

दीमक

पहचान चिन्हः यह कीट सफेद एवं हल्के भूरे रंग की होती है। ज मुख्यतः भूमि की निचली सतह पर पाये जाते है।

क्षतिः दीमक जड़ और तने में छेद करता है। छेद के कारण पौधा मर जाता है।

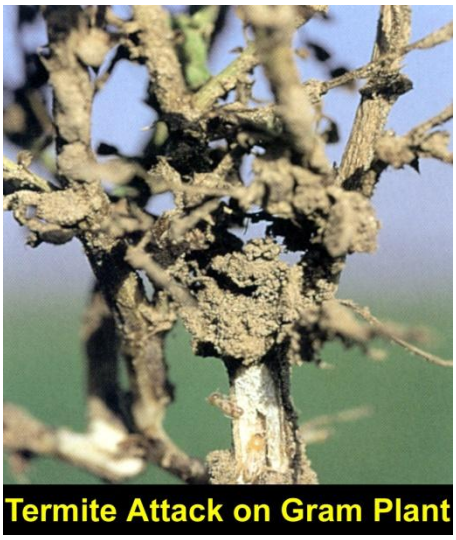

प्रबंधन

1. बुवाई से पहले गहरी जुताई , समय पर बुवाई अ©र फसल परिपक्वता के आधार पर प्रजातिय®ं की बुवाई करनी चाहिए।

2. दीमक हेतु बोनी के पहले क्लोरोफाइरीफॉस या कारबोफयूरान को मिट्टी में मिलाए।

3. बुवाई के समय धनियाॅं एवं अलसी केे साथ अतः फसल पद्धति से खेती करनी चाहिए या गेहूँ या अलसी के साथ अन्तरवर्तीय फसल लें।

4. कतार से कतार की दूरी ३० सेण्मीण् रखें।

5. संतुलित व संस्तुत मात्रा मे खाद व पानी का उपय ¨ग करना चाहिए।

वनस्पति अ©र पुष्पीकरण के समय

1. फली छेदक कीट की रोकथाम हेतु फेर ¨मान ट्रेप (५ से ७ प्रति हेक्टयर) का उपय¨ग करना चाहिए।

2. कीट भक्षी पक्षिय ¨ं को बैठने केे लिए ज् आकार की खुटियाॅं २०-२५ प्रति हेक्टयर की दर से खेत मे लगानी चाहिए।

3. नीम बीज सत् (मगजतंबज) ५: ;छैज़म्द्ध , नीम अ©र करंज तेल का उपय¨ग करना चाहिए।

4. एच.ए.एन.पी.वी. ;भ्ंछच्टद्ध / ४५० स्म् ० १: टीन ®प¨ल का प्रय¨ग करना चाहिए।

5. स्वीकृत कीटनाशक ¨ं जैसे डाइफ्लूअ ¨रर¨बेन्जूराॅंन ;क्पसिनतवइमद्वनतवद २५ ॅच्द्ध / २ ग्राम/लीटर या इमामेक्टीन बेन्ज¨एट ;म्उंउमबजपद ठमद्रवंजम ५ ैळद्ध / ०.२ ग्राम/लीटर या राइनेक्सीपीर ;त्लदंगलचलत ५० म्ब्द्ध / ०.१५ मि.ली. /लीटर का प्रदेशीय संस्तुत के अनुसार प्रय ¨ग करना चाहिए।

समेकित प्रबंधन

यांत्र्ाि्क प्रबंधन

1ण् थोड़ी थोड़ी दूर पर सूखी घास के छोटे.छोटे ढेर को रखकर कट्आ कीट की छिपी हुई सुड़ियों को प्रात खोजकर मार देना चाहिए।

2ण् खेत के चारो ओर एवं लाइनों के मध्य अफ्रीकन जाइन्ट गेंदे के ट्रैप क्राप केरूप में प्रयोग करना चाहिए।

3ण् चने की ब्वाई उत्तर.दक्षिण दिशा में नहीं करें द्य

4ण् बीजशोधन अवश्य करें द्य

5ण् चने में फूल आते समय सिंचाई न करें द्य

6ण् देर से ब्वाई हेतु शीघ्र पकने वाली प्रजाति का प्रयोग करें द्य

7ण् काब्ली चने में २ प्रतिशत बोरेक्स का छिड़काव करें द्य

8ण् असिंचित दशा में २ः यूरिया या डीण् एण् पीण् का छिड़काव फूल आते समय करना चाहिए द्य

9ण् पाइराइट जिप्समध्सिंगल सुपर फास्फेट के रूप में सल्फर की प्रतिपूर्ति करेंद्य

रासायनिक प्रबंधन

निम्नलिखित कीट नाशियों में से किसी एक को सामने लिखित मात्रा को प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव अथवा ७००.८०० लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें

1. इन्डोसल्फान ३५ इ.सी. का १.५ से २.० लीटर
2. क्यूनालफास २५ ई.सी. का १.५ से २.० लीटर
3. मैलाथियान ५० ई.सी. २ण्० लीटर
4. साइपरमेथ्रिन ७५० मिली.
5. फेनवेलरेट १ लीटर या फेनवेलरेट ०.४ प्रतिशत धुल २५ किग्रा.
6. फेन्थोएट २ प्रतिशत धूल २५ किग्रा.
7. दीमक हेतु सी 44 ईण्सीण् पालीट्रीन 1000 मिण्लीण् प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करें।

- निरिक्षण करते रहे एवं आवश्यकता पड़ने पर दूसरा छिड़काव करें द्य
- एक ही कीट नाशी का दो बार प्रयोग न करें द्य
- रसायनिक कीटनाशकों का उपयोग उस समय करना चाहिए जब कीट की संख्या म्ज्स् ;आर्थिक देहलीजद्ध स्तर को पार कर ले।

****